परी देश

लेखक

श्रीनाथसिंह

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

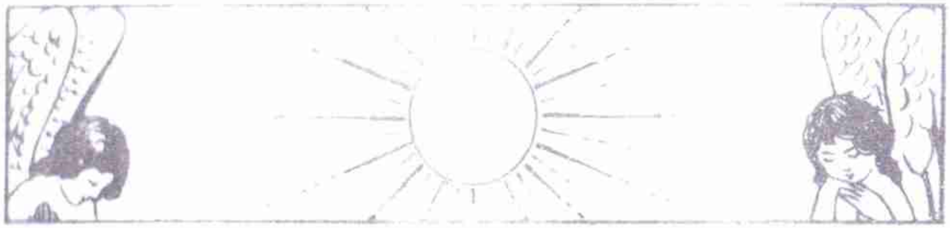
१९३५

[मूल्य ।=)

Printed and published by K. Mittra, at The Indian Press, Ltd., Allahabad,

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ
१	बाल-विनय	१
२	मुन्नू, मुन्नी और चम्पा	२
३	ईश्वर की माया	६
४	चम्पा और गोपाल	९
५	तारा की गुड़िया	१०
६	जादू के बीज	१३
७	जल की रानी	१७
८	गोपाल और चिड़िया	१९
९	दोनों भाई	२२
१०	चम्पा और चमेली	२३
११	पहरेदार	२६
१२	उपदेश	२८
१३	गोमती तन्दुरुस्त कैसे हुई	२९
१४	आ री चिड़िया !	३१
१५	लाल परी	३२
१६	घर से बाहर	३४
१७	गुड़िया से	३७
१८	महादेव जी का वरदान	३९
१९	चुन्नी-मुन्नी	४०
२०	परियाँ और बौना	४२
२१	मेरी गुड़िया	४५
२२	शेर-बच्चा	४६
२३	गुड़ियों की रानी	४९
२४	नये खिलौने	५०
२५	गुलाब और चमेली	५२
२६	देखो भाई	५४
२७	बन्द करो	५५



बाल विनय

परम पिता प्यारे परमेश्वर।
जाने कहां तुम्हारा है घर।
पास तुम्हारे आयें कैसे
स्वामी तुमको पायें कैसे।

माता ने है यह बतलाया
तुमने सूरज को चमकाया ॥
चिड़ियों में मिल गाते हो तुम।
फूलों में मुस्काते हो तुम ॥

देख यही सुख पाते हैं हम।
तुमको शीश झुकाते हैं हम ॥
नाथ! हमारे हो तुम पालक।
आओ! खेलो बनकर बालक ॥



मुन्नू, मुन्नी और चम्पा

मुन्नू, मुन्नी और चम्पा तीनों स्कूल चले। मुन्नू के पास किताब थी। मुन्नी के पास भी किताब थी। लेकिन चम्पा के पास कुछ नहीं था। राह में उसने कहा—अरे मेरी गुड़िया तो घर ही में रह गई। मैं खेलूँगी क्या ?

मुन्नू ने कहा—इसको खेलने ही की पड़ी है। मेरा तो सबक़ याद नहीं हुआ डर लग रहा है कि कहीं गुरुजी मार न बैठें।

मुन्नी बोली—यही हाल तो मेरा भी है। गुरुजी पूछेंगे सबक़ याद क्यों नहीं किया तो क्या कहूँगी।

चम्पा पहले ही पहल स्कूल जा रही थी। उसने समझा था कि स्कूल कोई ऐसी जगह है जहाँ बहुत से लड़के-लड़कियाँ जमा होकर खेलते हैं। मुन्नू और मुन्नी की बातें सुनकर वह कुछ डरी और कहने लगी—गुरुजी कैसे हैं ?

मुन्नू बोला—तुम्हीं बताओ कैसे होंगे।

चम्पा ने कहा—घर की तरह।



मुन्नू बोला—नहीं।

चम्पा ने कहा—पेड़ की तरह।

मुन्नी ने हँस कर कहा—यह भी नहीं।

चम्पा बोली—तो फिर बादल की तरह होंगे।

मुन्नू बोला—नहीं।

मुन्नी ने कहा—गरजने में ज़रूर बादल की तरह हैं। अब तो चम्पा डर गई। उसने कहा—मैं माँ के पास जाऊँगी।

एक तो देर हो रही थी, दूसरे सबक़ याद नहीं था, और राह में चम्पा मचल गई। अब मुन्नी मुन्नू करें तो क्या करें। दोनों ईश्वर से प्रार्थना करने लगे—

हे भगवान ! हे भगवान !
रक्षा करना हे भगवान !!

चम्पा भी उनके साथ तुतला कर गाने लगी—

ये बगवान ! ये बगवान !
लच्चा कलना ये बगवान !!

गाते गाते चम्पा को यह भूल गया कि गुरुजी बादल की तरह हैं और गरजते हैं। मुन्नू मुन्नी को भी सबक़ का ख़याल न रहा। प्रार्थना ख़तम होने पर वे स्कूल चले गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि अभी गुरुजी नहीं आये हैं और स्कूल में ख़ूब हल्ला हो रहा है।

और लड़के-लड़कियों से पूछने पर मालूम हुआ कि इन्सपेक्टर साहब आनेवाले हैं। उन्हीं को लेने गुरुजी गये हैं। मुन्नू ने कहा—भगवान ने विनती सुन ली।

मुन्नी बोली—अब हम भगवान की विनती रोज़ करेंगे।

चम्पा ने पूछा—कौन आनेवाला है?

मुन्नी ने जवाब दिया—"इन्सपेक्टर साहब।"

चम्पा बोली—इनपेक्टर कैसा होता है?

मुन्नी ने कहा—गुरुजी का भी गुरु।

थोड़ी देर में इन्सपेक्टर साहब और गुरुजी आ गये। उनको देखते ही लड़के चुप हो गये। चम्पा बड़ी अच्छी लड़की थी। उसको देखते ही इन्सेपक्टर ने गोद में उठा लिया और कहा—इसी तरह रोज़ पढ़ने आओगी न?

"नहीं।"

"क्यों?"

"गुरुजी बादल की तरह गरजते हैं।"

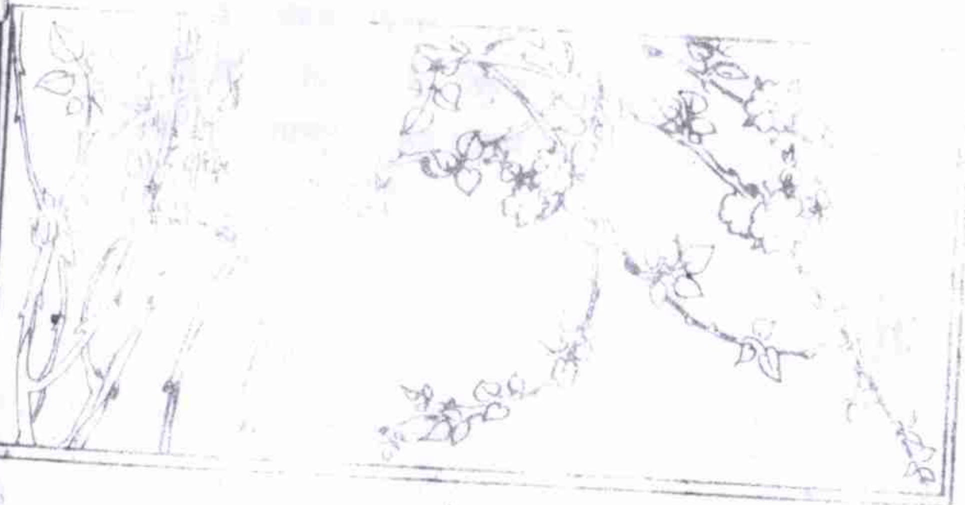
इन्सपेक्टर ने गुरुजी से कहा—जान पड़ता है तुम लड़कों को प्यार नहीं करते हो? लो इस लड़की को गोद में लेकर इसका डर दूर करो।

गुरुजी ने चम्पा को गोद में लेकर पूछा—बेटी क्या लोगी?

चम्पा ने कहा—"अब माँ के पास जाऊँगी।"

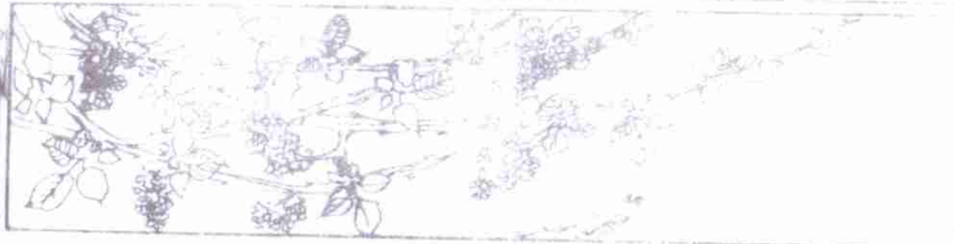
इन्सपेक्टर साहब ने कहा—आज सब लड़कों को छुट्टी दे दो।

सब लड़के गाते बजाते अपने घर चले गये। मुन्नी मुन्नू ने घर आकर चम्पा का सारा हाल कहा। उस दिन से वे रोज़ भगवान की विनती करने लगे और खूब सबक याद करने लगे।

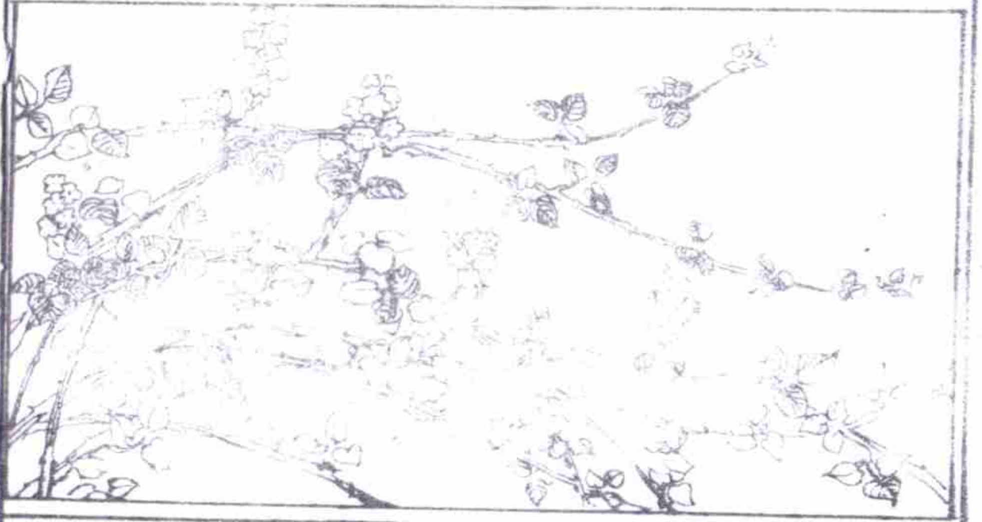


ईश्वर की माया

कारीगर है वह परमेश्वर,
उसकी छटा निराली है।
देखो जहाँ वहीं दुनिया में,
अजब मोहनी डाली है॥
सूरज जब ऊँचे चढ़ता है,
चकाचौंध हो जाता है।
घटता बढ़ता चाँद सुहाना,
लड़कों को ललचाता है॥
लप लप तारे करते हैं जब,
रात अँधेरी आती है।
थपकी दे दे लोरी गा गा,
माता हमें सुलाती है॥

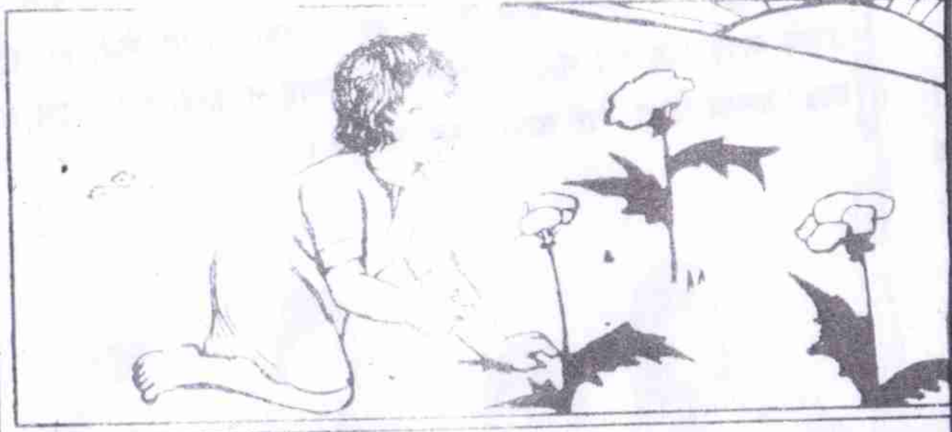


खाते हैं हम मीठे मेवे,
दूध मज़े में पीते हैं।
यह सब दान उसी प्रभु का है,
उसके ही बल जीते हैं॥
हरियाली से लदी लतायें,
खूब मज़े में हिलती हैं।
रङ्ग-बिरङ्गी कलियाँ उनमें,
देखो कैसी खिलती हैं॥
भन भन करते भौंरे आते,
फूलों पर मँडराते हैं।





कू कू कू कू कोयल करती,
मोर नाचते गाते हैं ।।
बादल नदी पहाड़ पेड़ सब,
जो जो हमें लुभाते हैं ।
अपना सारा रूप मनोहर,
ईश्वर से ही पाते हैं ।।
उसने ही तो प्यारे बच्चो,
रची हमारी काया है ।
जो कुछ भी होता है जग में,
सब उसकी ही माया है ।।





चम्पा और गोपाल



चम्पा—जो पण्डित हो आगे आवे ।
मेरा एक सवाल बतावे ।
गोपाल—हाँ पूछो बतलाऊँगा मैं ।
पण्डित क्यों न कहाऊँगा मैं ।
चम्पा—कितने आसमान में तारे ?
गोपाल—जितने सिर में बाल तुम्हारे ।
चम्पा—बाल हमारे सिर में कितने ?
गोपाल—पत्ते लगे पेड़ में जितने ।
चम्पा—अच्छा यह बतलाओ भाई ।
तितली ने क्यों रंगत पाई ?
क्यों नदियाँ बहती रहती हैं ?
क्यों चिड़ियाँ चूँ चूँ कहती हैं ?
हाथी क्यों है इतना मोटा ?
चींटी क्यों है इतना छोटा ?
गोपाल—यह तो ईश्वर की माया है ।
इसको कौन जान पाया है ।।





तारा की गुड़िया

तारा की गुड़िया खो गई थी। ढूँढ़ते ढूँढ़ते उसे कई दिन हो गये पर गुड़िया न मिली। इससे तारा बहुत उदास रहने लगी। उसकी माँ ने कहा—बेटी तारा, सोच न करो। एक गुड़िया खो गई है तो दूसरी मँगवा दूँगी।

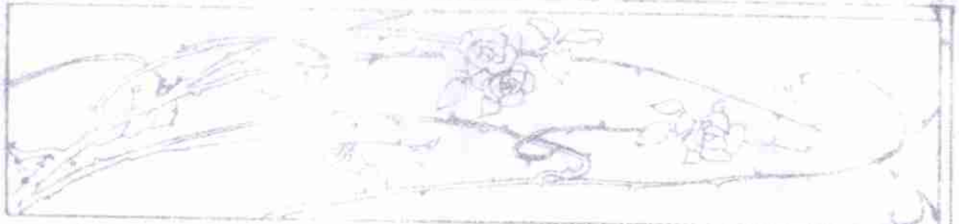
तारा ने जवाब दिया—उसके सामने तो तुमने दूसरी गुड़िया नहीं मँगाई, जब तक रही बेचारी अकेली ही रही।

माँ ने कहा—अच्छा अब की बार दो एक साथ मँगा दूँगी।

तारा बोली—नहीं माँ, अब मैं गुड़िया न लूँगी। एक के खो जाने का तो मुझे इतना अफ़सोस है, दो खो जायँगी तब तो मेरा जीना ही कठिन हो जायगा।

माँ ने कहा—गुड़ियों को क्या जीव होता है जो इस तरह सोच करती है।

तारा ने जवाब दिया—गुड़ियों को जीव होता हो या नहीं, पर मेरी उस गुड़िया को जीव ज़रूर था, वह बोलती नहीं थी पर सुनती सब कुछ थी, हमेशा मुस्काती रहती थी, जो मैं पहना देती वही पहन लेती, कभी कपड़े गहने के लिए लड़ती न थी, उसकी आँख कैसी अच्छी बनी थी। मेरी ओर वह एकटक देखती रहती और कभी पलक न मारती थी। वह बड़ी अच्छी गुड़िया थी, हाय वह क्या हो गई।



तारा रोने लगी। माँ ने उसे गोद में बैठा लिया और थपकी दे दे कर सुला दिया। अब तारा सपना देखने लगी। उसने देखा कि उसकी वह प्यारी गुड़िया उसके पास आकर रो रही है और कह रही है कि अब मैं न जिऊँगी। तारा कुछ जवाब देने ही वाली थी कि उसने देखा कि एक बड़ा सा कुत्ता गुड़िया पर झपट पड़ा है और उसको लेकर भगा जा रहा है।

नींद में ही तारा उठी और द्वार की तरफ़ जाने लगी। माँ ने उसे पकड़ कर कहा—बेटी! सपना था क्या?

"गुड़िया को कुत्ता लिये जा रहा है माँ।" कहती हुई तारा बाहर दौड़ी। गली में सचमुच एक कुत्ता मुँह में वही गुड़िया दबाये खेल रहा था। पर उसे वह कूड़े में से निकाल कर लाया था। तारा ने पास जाकर कुत्ते के मुँह से गुड़िया छीन ली। वही गुड़िया थी पर मैली हो गई थी, उसके कपड़े फट गये थे। इसकी कोई परवाह न करके तारा उसे घर ले आई, उसको धोया और साफ़ कपड़े पहनाये।





अब तारा के पास बीसों और एक से एक सुन्दर गुड़ियां हैं। पर उस मैली और पुरानी गुड़िया को वह सबकी रानी कहती है। बड़ों को आदर मिलना ही चाहिये।





जादू के बीज

घर में एक बर्तन में कुछ बीज रखे थे। चमेली उन्हें उठा कर बाग में ले गई और एक एक गिरा कर कहने लगी—क्या अच्छा होता कि ये बीज अभी उग आते, हरे भरे पत्ते हिलने लगते और फूल खिलने लगते।

वे जादू के बीज थे। उनमें यह खूबी थी कि उनको हाथ में लेकर आदमी जो कहता था वही होने लगता था। धीरे धीरे चमेली की बात पूरी होने लगी। उसने देखा कि बीज उग रहे हैं, हरे हरे पत्ते हिल रहे हैं और फूल भी खिल रहे हैं। वह बड़ी खुश हुई और कहने लगी—एक





लड़का आ जाता और फूल तोड़ कर मेरे लिए इकट्ठा कर देता तो बड़ा अच्छा होता।

उसका यह कहना था कि फूल तोड़ता हुआ उसे एक लड़का दिखाई पड़ा। लड़के ने पूछा—तुम्हारे पास अब कितने बीज हैं।

चमेली ने जवाब दिया—तीन!

"तुम्हारी तीन बात और पूरी होगी" कह कर लड़के ने बहुत से फूल तोड़ कर उसे दे दिये।

चमेली आगे बढ़ी और एक बीज गिरा कर कहने लगी—मेरे साथ चलने के लिए मेरी ही तरह दो लड़कियाँ और आ जातीं तो अच्छा था।

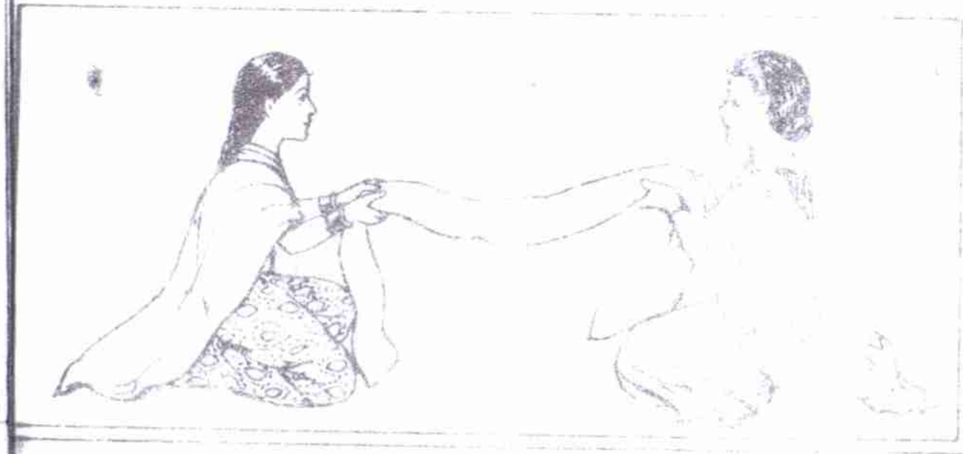
वह यह कहने भी न पाई थी कि दो सुन्दर लड़कियाँ आकर ज़मीन पर बैठ गईं और न जाने क्या खेल खेलने लगीं। चमेली उनको साथ



लेकर घर की तरफ़ चली। अपने घर पहुँच कर उसने सोचा कि हम लोगों को कोई न देखे और हम एकाएक माँ के सामने खड़ी हो जायँ तो बड़ा अच्छा हो। बस उसने एक बीज और गिरा कर कहा—हमें कोई न देखे।

तीनों लड़कियाँ सारे घर में घूमने लगीं, पर उन्हें किसी ने नहीं जाना। एक कमरे में पहुँच कर उसने देखा कि उसकी माँ बैठी है और उसके दोनों भाई मोहन और भोला खड़े हैं। चमेली ने सोचा माँ के पास एक छोटा सा बच्चा और आ जाय तो उसे बड़ा अचम्भा होगा। बस उसने तीसरा बीज गिरा कर कहा—माँ के पास एक छोटा सा बच्चा और आ जाय।

उसने यह कहा ही था कि उसकी माँ के पास बिस्तर लग गया और उस पर एक छोटा सा बच्चा सोता हुआ दिखाई देने लगा। मोहन और भोला ग़ौर से उसे देखने लगे, माँ उसको प्यार करने लगी।



अब चमेली के पास एक भी बीज नहीं था। उसने चाहा कि माँ के सामने प्रकट हो जाऊं पर उसके पास गिरा कर कहने को बीज नहीं थे। इसलिए उस पर जादू के बीज का असर ज्यों का त्यों बना ही रह गया। अब वह अपनी दोनों सखियों के साथ सारे घर में घूमती है पर उसे कोई देख नहीं सकता। माँ आवाज़ के सहारे उसे खाना आदि दे देती है।

अब चमेली के पास एक भी बीज नहीं था। उसने चाहा कि मां के सामने प्रकट हो जाऊँ पर उसके पास गिरा कर कहने को बीज नहीं थे। इस लिये उस पर जादू के बीज का असर ज्यों का त्यों बना ही रह गया। अब वह अपनी दोनों सखियों के साथ साथ घर में घूमती है पर उसे कोई देख नहीं सकता। मां आवाज के सहारे उसे खाना आदि दे देती है।



जल की रानी



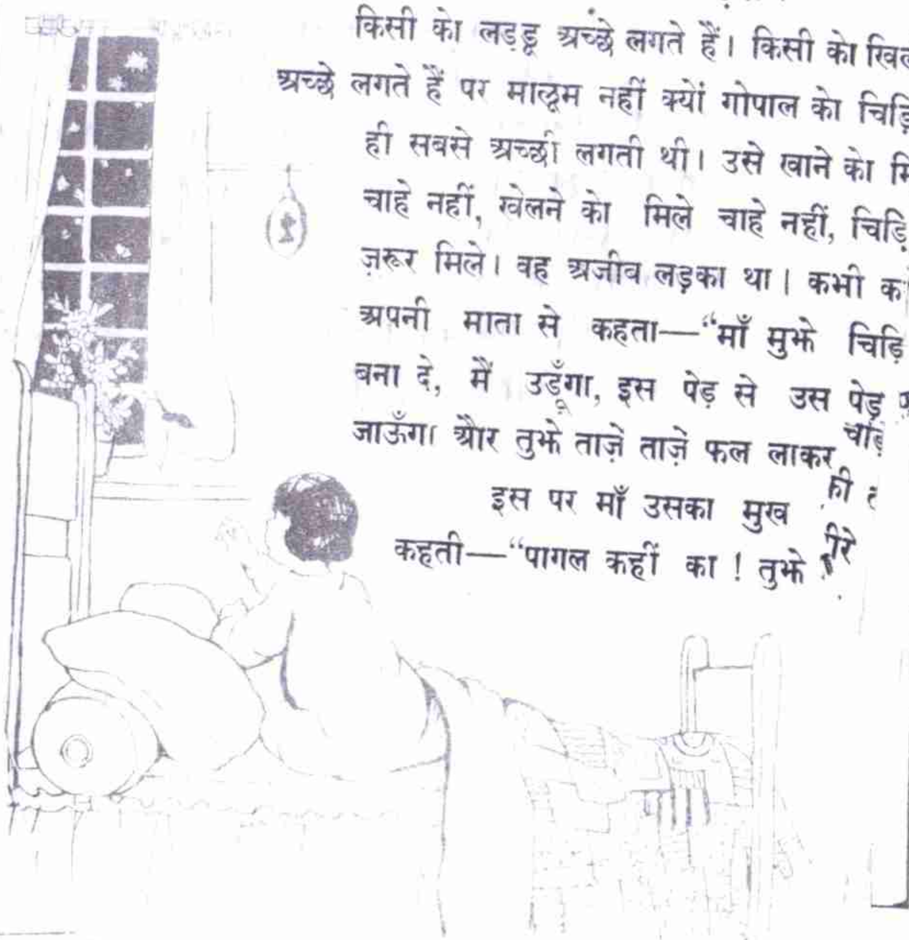
देखो बच्चो जल से बाहर,
आई है जल की रानी।
मछली का-सा आधा तन है,
बालों से झड़ता पानी॥
जहाँ नहीं जाता है कोई,
वहाँ बैठ यह गाती है।
आते देख जहाज़ दूर से,
पानी में छिप जाती है॥
बड़ी लजीली है यह इसको,
देख न कोई पाते हैं।
अन्दाज़े से इसकी बातें,
सारे लोग सुनाते हैं॥

सागर की मिल सभी मछलियाँ,
इसको खूब सजाती हैं।
मूँगों और मोतियों की,
माला लाकर पहनाती हैं॥
लहरों पर यह खेला करती,
लहरों पर यह सोती है।
किसी बात के लिए नहीं यह,
दुखी कभी भी होती है॥
लहरों के झूले पर इसको,
सागर सदा झुलाता है।
आसमान में चमक चन्द्रमा,
इसका तन चमकाता है॥

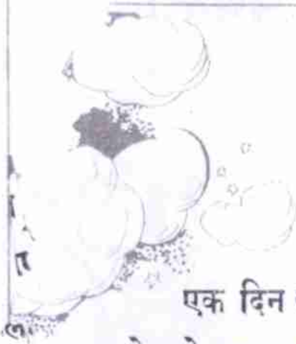


गोपाल और चिड़िया

एक लड़का था। उसका नाम गोपाल था। उससे अगर कोई पूछ
"गोपाल क्या लोगे?" तो उसी दम जवाब देता—"चिड़िया।"



किसी को लड्डू अच्छे लगते हैं। किसी को खिलौने
अच्छे लगते हैं पर मालूम नहीं क्यों गोपाल को चिड़िय
ही सबसे अच्छी लगती थी। उसे खाने को मि
चाहे नहीं, खेलने को मिले चाहे नहीं, चिड़ि
ज़रूर मिले। वह अजीब लड़का था। कभी क
अपनी माता से कहता—"माँ मुझे चिड़ि
बना दे, मैं उड़ूँगा, इस पेड़ से उस पेड़ पर
जाऊँगा और तुझे ताज़े ताज़े फल लाकर चा
इस पर माँ उसका मुख ... की त
कहती—"पागल कहीं का! तुझे ... रे

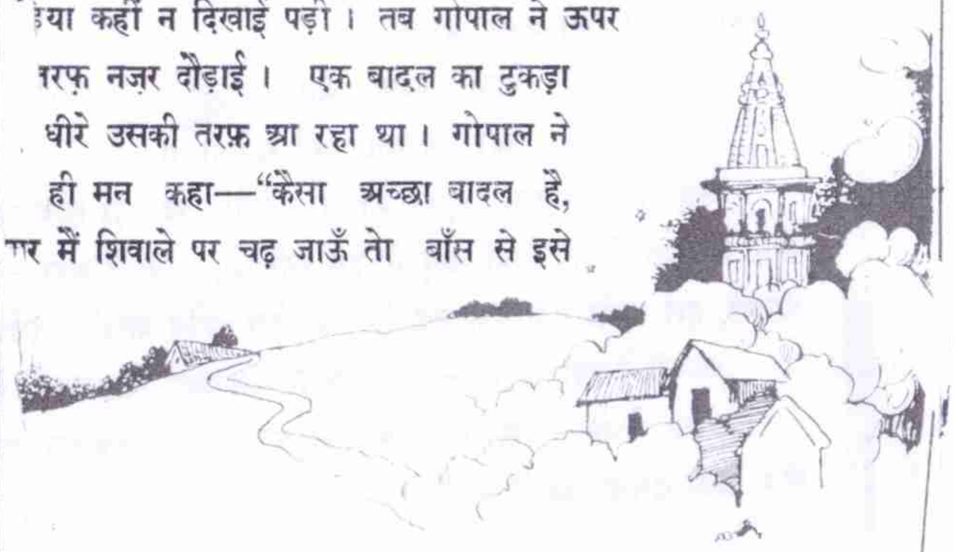


बना दूँगी तो मेरी गोद में बैठकर मुझसे प्यारी प्यारी बातें कौन करेगा।"

यह सुनकर गोपाल चुप हो जाता और इधर-उधर देखने लगता।

एक दिन की बात है। वह अपने गुलगुल बिछौने पर सो रहा था। सवेरा हो गया था पर उसकी नींद न खुली थी। उसने सपने में ेखा कि एक चिड़िया पेड़ की डाल पर बैठी कह रही है—"जागो गोपाल !"

गोपाल उठ कर बैठ गया और खिड़की [illegible] ओर देखने ल। घरों को देखा, पेड़ों को देखा, ऊँचे शिवाले को देखा, पर उसे ड़िया कहीं न दिखाई पड़ी। तब गोपाल ने ऊपर तरफ़ नज़र दौड़ाई। एक बादल का टुकड़ा धीरे उसकी तरफ़ आ रहा था। गोपाल ने ही मन कहा—"कैसा अच्छा बादल है, ार मैं शिवाले पर चढ़ जाऊँ तो बाँस से इसे



छू सकता हूँ। पर शिवाले पर चढ़ूँगा कैसे? इतनी ऊँची सीढ़ी कहाँ पाऊँगा ?"

इसी बीच में उसे चूँ चूँ की आवाज़ सुनाई पड़ी।

"बाहर कोई चिड़िया ज़रूर होगी।" यह कहता हुआ गोपाल अपने बिछौने से उठा, जूता पहना, शिर पर टोपी रखी और एक बरतन में कुछ मिठाई लेकर बाहर निकला।



पेड़ की डाल पर सचमुच एक चिड़िया बैठी थी। गोपाल ने कहा—"प्यारी चिड़िया, लो मिठाई खाओ।"

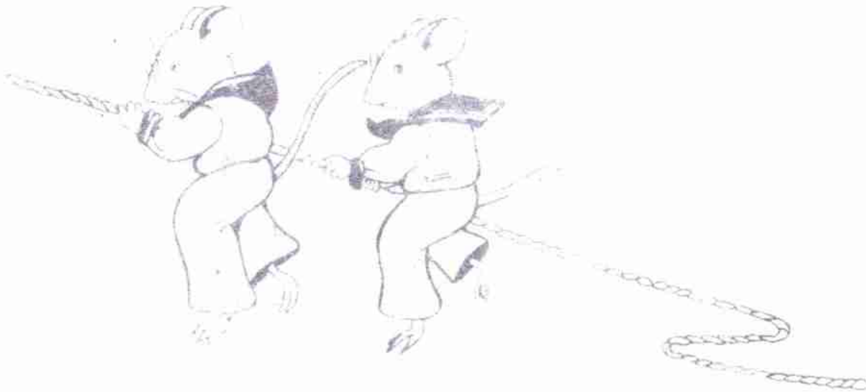
चिड़िया ने कहा—"चूँ चूँ, मैं तुम्हारे पास नहीं आऊँगी, तुम मुझे पकड़ लोगे।"

गोपाल बोला—"नहीं, नहीं, तुम्हारे साथ खेलने आया हूँ तुम्हें पकड़ूँगा नहीं, तुम बड़ी अच्छी चिड़िया हो।"

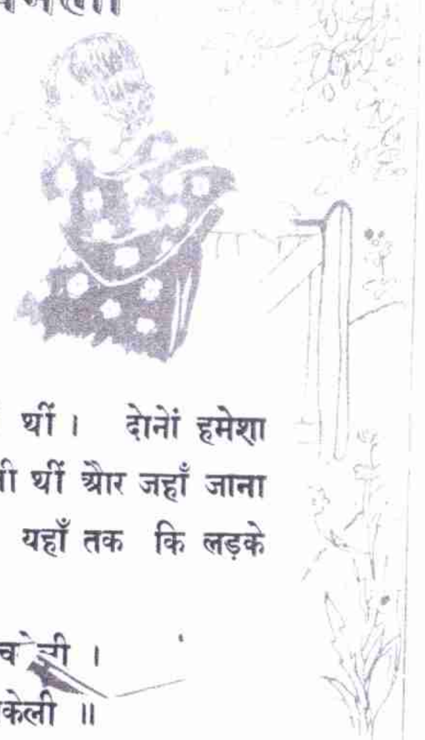
चिड़िया चूँ चूँ करके मिठाई खाने लगी। कहते हैं उस दिन से रोज़ सवेरे वह चिड़िया उसी जगह पर आकर बैठती है और गोपाल कुछ न कुछ खाने की चीज़ लाकर उसे देता है।

दोनों भाई

दोनों भाई दोनों भाई ।
बने बालचर दोनों भाई ॥
कहाँ जायगी इनसे बच कर ।
बिल्ली की अब आफ़त आई ॥
"म्याऊँ" सुने न मुख मोड़ेंगे ।
पकड़े बिना नहीं छोड़ेंगे ॥
यदि रस्सी कुछ छोटी होगी ।
तो ये अपनी दुम जोड़ेंगे ॥



चम्पा और चमेली



चम्पा और चमेली दोनों सगी बहनें थीं। दोनों हमेशा साथ साथ रहती थीं, साथ साथ खाती पीती थीं और जहाँ जाना होता था साथ ही साथ जाती भी थीं। यहाँ तक कि लड़के उनको देखकर गाने लगते थे—

दोनों चम्पा और चमेली ।
नहीं जायँगी कहीं अकेली ॥

कहानी कहने और सुनने का भी दोनों को बड़ा शौक़ था। एक दिन की बात है जब दोनों बाग़ में घूम रही थीं, चम्पा ने कहा—"चमेली, आओ, हम दोनों एक एक कहानी कहें, देखें कौन अच्छी कहती है।"

चमेली ने जवाब दिया—"नहीं आधी तुम कहो और आधी मैं कहूँ।"

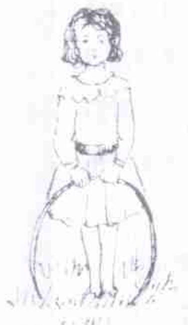
चम्पा बोली—"यही सही, पर मैं आधे पर से कह कर छोड़ दूँगी और बाक़ी तुमको कहनी पड़ेगी।"

चमेली—"हाँ, हाँ, कहो।"

चम्पा ने कहना शुरू किया—"एक लड़की थी, वह बड़ी दुलारी लड़की थी। जितनी वह दुलारी थी उतनी ही खिलाड़ी भी थी। वह सवेरे अपने बाप की भेड़ें लेकर खेलते खेलते खेत तक चली जाती थी। और जब उसको भूख लगती थी तो भेड़ों को वहीं छोड़ कर घर चली आती थी, फिर भेजने से भी खेत में नहीं जाती थी।"

इतना कहने के बाद चम्पा ने कहा—"आधी कहानी हो गई अब आगे तुम कहो।"

थोड़ी देर सोचने के बाद चमेली कहने लगी—"उस लड़की के बाप ने भेड़ चराने के लिए एक लड़का नौकर रक्खा था। वह लड़का भी अपनी माँ का बड़ा दुलारा था। पर उसकी माँ बड़ी ग़रीब थी इससे बजाय खेलने के उसने भेड़ चराने की नौकरी कर ली थी। लड़की के चले आने



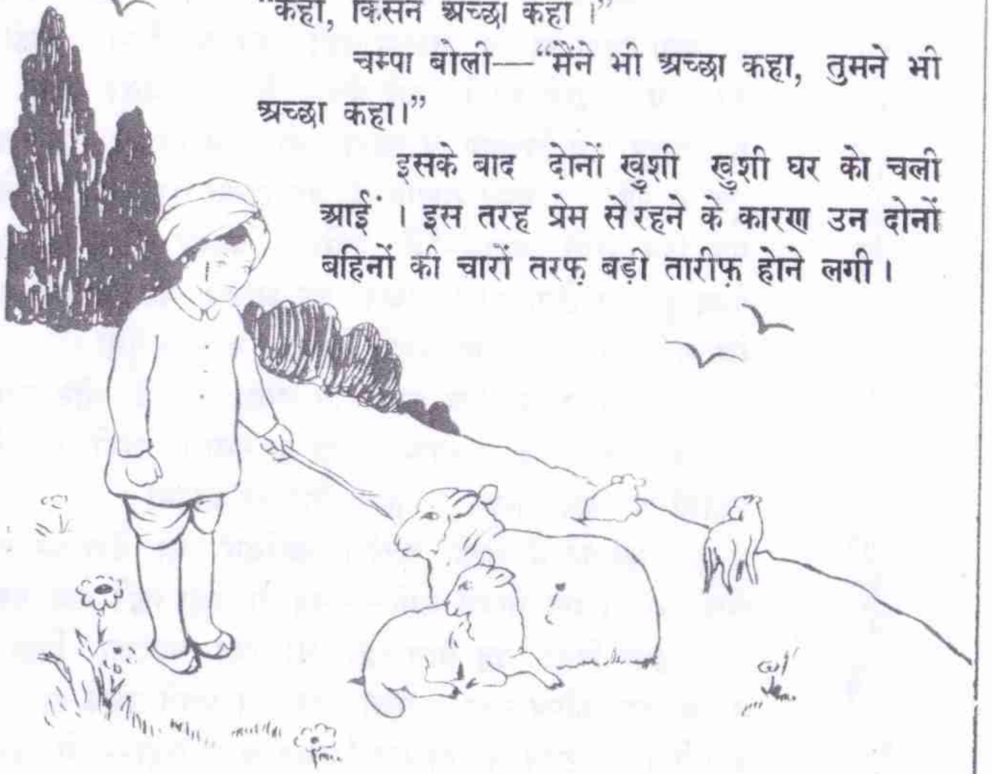


पर वह खेत में जाता था और दिन भर भेड़ों के साथ रहता था। जब दिन डूब जाता था, चिड़ियाँ अपने बसेरों पर जाने लगती थीं, भेड़ें चरते चरते थक कर बैठ जाती थीं तो वह लड़का कहता था—'चलो अब घर को चलें, शाम होगई।' इस तरह रोज़ वह भेड़ चराता था और अपनी माँ को आराम देता था।"

इतना कहने के बाद चमेली ने कहा—
"कहो, किसने अच्छा कहा।"

चम्पा बोली—"मैंने भी अच्छा कहा, तुमने भी अच्छा कहा।"

इसके बाद दोनों ख़ुशी ख़ुशी घर को चली आईं। इस तरह प्रेम से रहने के कारण उन दोनों बहिनों की चारों तरफ़ बड़ी तारीफ़ होने लगी।



पहरेदार

किसी घर में बहुत से चूहे रहते थे। उनको इस बात का हमेशा डर लगा रहता था कि मालूम नहीं कब और किसको बिल्ली आकर चट कर जाय। इसी डर के मारे बेचारे बिल के बाहर बहुत कम निकलते थे। बाहर कम निकलने से खाना भी कम मिलता था इससे वे दुबले हुए जा रहे थे। अपने भाइयों की यह हालत एक चूहे से देखी न गई। एक दिन उसने कहा—"मैं पहरेदार बनकर बिल्ली के रास्ते में खड़ा होता हूँ, तुम लोग बाहर निकल कर भोजन की तलाश करो, जब तक मेरे शरीर में जान रहेगी, बिल्ली को इधर आने न दूँगा।"

यह कहते हुए सिर पर टोप लगा हाथ में तीन चार तिनके ले वह बिल्ली के रास्ते में आकर खड़ा हो गया। उसने यह सोचा था कि तिनकों को बिल्ली बन्दूक़ समझेगी और डर जायगी।

थोड़ी देर में बिल्ली आई। पहरेदार को देख कर खड़ी हो गई और मन ही मन सोचने लगी—"यह तो चूहा नहीं जान पड़ता।"

इधर बिल्ली यह सोच रही थी उधर पहरेदार बिल्ली को देखकर डर के मारे काँपने लगा। ऐसा जान पड़ा मानों उसके हाथ से बन्दूक़ छूट जायगी। पर उसने मन ही मन हिम्मत करके कहा—"मैं पहरेदार हूँ, मुझे

डरना न चाहिए, मेरे हाथ में बन्दूक़ है। मरना तो एक दिन होगा ही, बहादुर की तरह क्यों न मरूँ?"

वह आगे बढ़ा। उसको आगे बढ़ते देख बिल्ली ने सोचा—"यह ज़रूर कोई दूसरा जानवर है और मुझे मारने आ रहा है।"

बस वह लौट गई और एक कोने में लेट कर सोचने लगी—"हाय! अब मैं कहाँ जाऊँ और क्या खाऊँ।"

पहरेदार ने अपने साथियों से आकर कहा—"अब कोई डर नहीं, मैंने बिल्ली को भगा दिया, तुम सब बेफ़िक्र होकर भोजन की तलाश करो।"

चूहे इधर से उधर घूमने लगे। घूमते घूमते वे उस जगह आये जहाँ बिल्ली लेटी थी। उसे देखते ही बेचारे चूहों का होश उड़ गया। पर एक ने हिम्मत करके कहा—"बुलाओ पहरेदार को।" यह सुनकर बिल्ली और भी डर गई और मन ही मन कहने लगी—"ज़रूर कोई जानवर चूहों की मदद करने आया है, हाय अब क्या करूँ।"

इस तरह उस घर के चूहों को बिल्ली का डर जाता रहा।



उपदेश

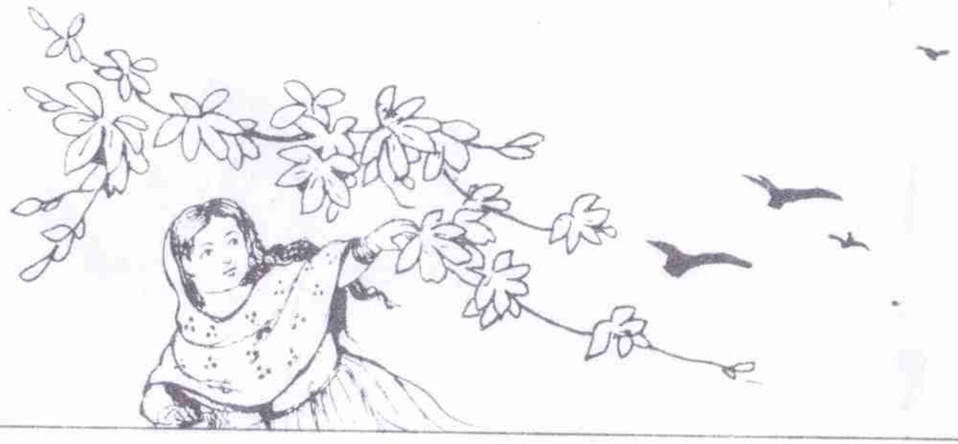


मुन्नी बैठी गुड़ियाँ लाकर ।
उन्हें लगी कहने समझा कर ॥
गुड़ियो करना नहीं लड़ाई ।
मिलकर रहना बहिन व भाई ॥
सदा बड़ों का आदर करना ।
सच कहने में कभी न डरना ॥
खेल कूद में दिन न बिताना ।
पढ़ने में मन खूब लगाना ॥
करना देश जाति की सेवा ।
सेवा ही में है सब मेवा ॥
यह सुन उसकी माता बोली ।
तू भी सुन अब बेटी भोली ॥
गुड़ियों को जो सिखलाती तू ।
वही अगर कर दिखलाती तू ॥
तो गुड़िया बन दुनिया सारी ।
सुनती तेरी बातें प्यारी ॥

गोमती तन्दुरुस्त कैसे हुई ?

गोमती एक दुबली पतली लड़की थी, कभी उसको जुकाम हो आता, कभी बुख़ार । हमेशा वह खाट पर लेटी रहती और सब लड़कों को खेलते कूदते देखती तो उसे बहुत दुख होता । एक दिन उसके घर पर एक हकीम आया और गोमती को देखकर कहने लगा—अगर यह लड़की रोज़ सवेरे उठकर बाग़ में जाय वहाँ खूब खेले । फिर घर आकर स्नान और पूजा करे तो इसको कोई रोग नहीं हो सकता ।

गोमती के दिल में यह बात बैठ गई । वह बड़े तड़के उठकर बाग में जाने लगी । बाग़ में जाकर वह इधर से उधर दौड़ती, पेड़ों और लताओं से खेलती तथा उड़ती चिड़ियों से कहती—"चिड़ियो, भगवान् से जाकर कहो कि गोमती को अच्छी कर दें ।"



घर आकर वह खूब मलमल कर नहाती और साफ़ कपड़े पहन कर खिड़की के पास खड़ी होती। जब सूरज निकलता तो गोमती कहती—"भगवान्, मुझे अच्छी कर दो।"

कुछ दिन में गोमती का रोग दूर हो गया। अब वह इतनी मोटी-ताज़ी होगई है कि बड़ी बड़ी लड़कियाँ उससे नहीं जीततीं। जब कोई पूछता है गोमती तू इतनी मोटी कैसे हो गई तो वह जवाब देती है—"रोज़ सवेरे उठकर बाग़ में घूमने से, नहाने से और भगवान् से विनय करने से।"



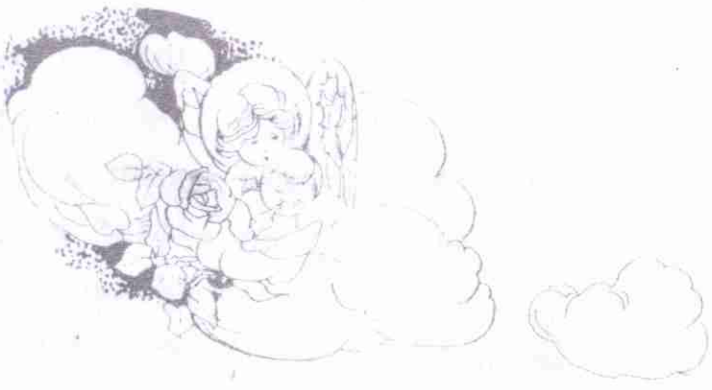
आ री चिड़िया!

आ री चिड़िया! आ री चिड़िया!
अपना गीत सुना री चिड़िया!
किन पङ्खों से उड़ती है तू,
मुन्नी को दिखला री चिड़िया॥
चावल तुझे चुगायेगी यह।
तेरे पीछे धायेगी यह॥
गुड़ियों के पैरों का झुन झुन।
ले तुझको पहनायेगी यह॥



हन कर
हती—
मोटी-
तब कोई
—"रोज़
ने से।"

लाल परी



बादल में एक परी रहती है। उसका नाम लाल परी है। उसके दो सुन्दर सुन्दर पंख हैं। वह सदा अपने पास एक गुलाब का फूल रखती है और उससे बालकों का होंठ रँगा करती है। जब रात होती है और पृथ्वी पर के सब जीव सो जाते हैं तो वह परी उतरती है। किसी सोते हुए बच्चे को वह चुपके से उठा ले जाती है, उसे इधर उधर की सैर कराती है और फिर जहाँ से उसे ले जाती है वहीं रख जाती है।

एक बार की बात है कैलाश नाम का एक लड़का रहता था। उसके एक बहन थी, जिसका नाम तारा था। कैलाश और तारा दोनों लाल परी के बारे में बातें किया करते थे। एक रोज़ लाल परी उनकी बातें सुनने के लिए ठहर गई। उसकी गोद में एक छोटा सा बच्चा भी था। लाल

परी की वे दोनों बड़ी तारीफ़ कर रहे थे! अपनी तारीफ़ सुनकर लाल परी ने कहा—"यह बच्चा तुम्हें दूँगी, यह बड़ा अच्छा बच्चा है।"

मारे ख़ुशी के कैलाश और तारा को रात भर नींद नहीं आई। सवेरा होते ही वे माँ के पास पहुँचे और देखा कि सचमुच एक छोटा बच्चा माँ की गोद में लेटा है।

"यह हमारा बच्चा है, लाल परी ने हमें दिया है।" कह कर कैलाश और तारा दोनों उछलने और शोर मचाने लगे।

माँ ने बच्चे को एक गुलगुल बिछौने में लिटा दिया और कहा—"तुम्हारा है तो लो इसे सँभालो।"

कैलाश और तारा दोनों बच्चे के पास बैठ गये और उसे गौर से देखने लगे।

———



घर से बाहर

गौरी अपने माँ-बाप की अकेली लड़की थी। वह कभी घर से बाहर न निकली थी। जब कभी वह माँ से बाहर जाने के लिए पूछती तो माँ कहती—"अभी तुम बहुत छोटी हो, बड़ी हो जाना तो जहाँ चाहे वहाँ जाना।"

एक दिन जब माँ किसी काम से पड़ोसी के यहाँ गई थी, गौरी सोचने लगी—"अब मैं छोटी नहीं हूँ, बहुत बड़ी हो गई हूँ। उस दिन घर में जो मेहमान आये थे वे भी कहते थे कि गौरी बहुत बड़ी हो गई है। अब मुझे क्या डर है? अब मैं घर से बाहर जा सकती हूँ।"



बस गौरी घर से बाहर निकल पड़ी। दोपहर का समय था। जो आदमी बाहर काम करते रहते हैं वे भी इस समय खाना खाने और आराम करने के लिए घर में चले आते हैं। इसलिए गौरी की किसी आदमी से भेंट न हुई। चारों तरफ़ सुनसान था, बड़े बड़े पेड़ हवा में हिल रहे थे। एक पेड़ से कुछ फूल ज़मीन पर गिरे थे, गौरी ने उन्हें उठा लिया और मन ही मन कहा—"इसे ले चलकर माँ को दूँगी, माँ बड़ी ख़ुश होगी, फिर तो वह मुझे रोज़ जङ्गल में सैर करने को भेजेगी।"

इसी तरह ख़ुश होती हुई गौरी आगे बढ़ती चली जा रही थी। रास्ते में एक गिलहरी बैठी कुछ खा रही थी। गौरी उसे पकड़ने के लिए लपकी पर गिलहरी तेज़ी से दौड़कर पेड़ के ऊपर चढ़ गई और कहने लगी—"लड़के चाहे जितना दौड़ें, चाहे जितना चुपके चुपके आवें मुझे पकड़ नहीं सकते।"



इधर गिलहरी यह कह रही थी उधर उछलता कूदता हुआ एक खरगोश उसके सामने से निकल गया और पेड़ की आड़ में से सिर निकाल कर उसे देखने लगा। गौरी ने कहा—"यदि मैं भी इतनी तेज़ दौड़ सकती तो बड़ा अच्छा होता।"

इसी बीच में चीं चीं करके एक चिड़िया बोल उठी। वह चिड़िया को देखने लगी। बड़ी अच्छी चिड़िया थी। गौरी कहने लगी—"यदि मैं भी चिड़िया होती तो माँ के पास उड़कर पहुँच जाती।"

चिड़िया ने चीं चीं करके कहा—"और मैं तुम्हारी तरह लड़की होती तो किताब क़लम लेकर स्कूल में पढ़ने जाती।"

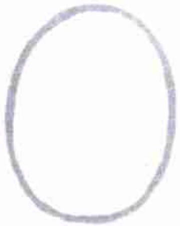
गौरी और आगे बढ़ी। हरी घास में एक चूहा बैठा था। पास ही एक छाता-सा न जाने क्या उगा हुआ था।

चूहा बोला—"जब अँगूठे अँगूठे भर के आदमी होने लगेंगे तो इसी छाते के नीचे आकर बैठेंगे।"

गौरी घर को लौट आई।
उस दिन से उसे रास्ता आ गया।

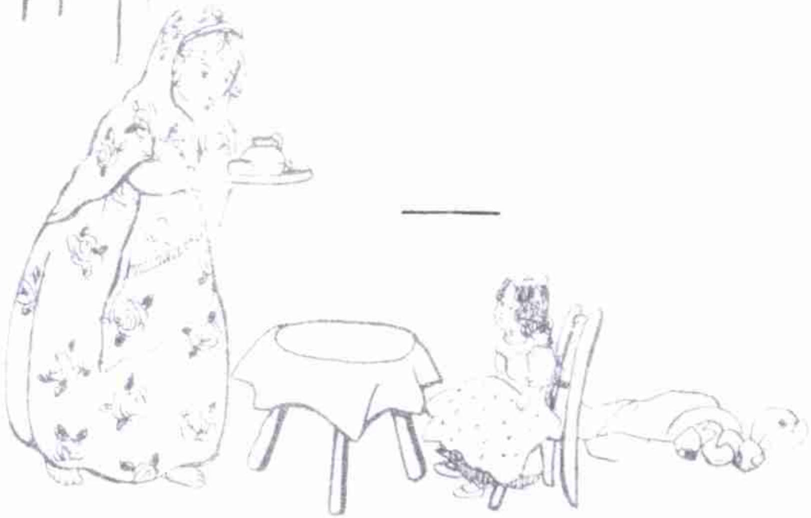
गुड़िया से

आ गुड़िया गोदी में मेरी।
देखूँ भोली सूरत तेरी॥
गुप चुप क्या तू देख रही है।
मन में क्या तू लेख रही है॥
आँखों की पुतली है काली।
होंठों पर है खासी लाली॥
तन की तेरे छटा निराली।
गई कौन साँचे में ढाली॥
नाक बड़ी है तेरी छोटी।
बाँधे क्यों है मुट्ठी मोटी॥
देखूँ तो मैं तेरा मुखड़ा।
कह कुछ अपने मन का दुखड़ा॥
चल तुझको नहलाऊँगी मैं।
सिर में तेल लगाऊँगी मैं॥
कपड़े सुन्दर साफ़ पहनकर।
तुरत बैठ जाना कुर्सी पर॥



मेज़ सामने छोटा सा घर।
लाऊँगी मैं चाय बनाकर॥
उसको पीकर पढ़ने जाना।
छुट्टी होते ही घर आना॥
गुड़िया क्या बैठी है देखो।
क्या अकड़ी ऐंठी है देखो!!
लड़की लेकर चाय खड़ी है।
साड़ी उसकी फूल जड़ी है॥









महादेव जी का वरदान

विनोद बड़ा खिलाड़ी लड़का था। मिट्टी और फावड़े से खेलना उसे बहुत अच्छा मालूम होता था। एक बार जब बरसात का मौसिम आया और आसमान में बादल घूम घूम कर पानी बरसाने लगे तो विनोद बाग़ में गया और फावड़े से खोद खोद कर मिट्टी का ढेर लगाने लगा। थोड़ी देर में उस मिट्टी से आवाज़ आने लगी—"विनोद मैं मिट्टी का महादेव हूँ। क्या चाहते हो बोलो।"

विनोद—"मैं चाहता हूँ कि मेरी तरह के जितने लड़के हैं सब ख़ूब खेलें और उन्हें कोई न रोके।"

महादेव जी ने कहा—"बहुत अच्छा।" तभी से छोटे लड़के ख़ूब खेलते हैं और उन्हें कोई नहीं रोकता।

चुन्नी-मुन्नी

कौवे काँ काँ बोल रहे थे ।
डाल डाल पर डोल रहे थे ॥
खुश हो होकर उनके छोटे ।
बच्चे भी मुँह खोल रहे थे ॥
चुन्नी-मुन्नी उठ बिस्तर से ।
गुड़ियाँ ले ले निकलीं घर से ॥
और लगीं आपस में कहने—
आज चलेंगी नहीं मदरसे ॥
ऊपर कौए शोर मचाते ।
तिनके ला घोंसला बनाते ॥
नीचे कहतीं चुन्नी-मुन्नी—
हैं हमको ये गान सुनाते ॥

जाने कैसे कर से छूटा ।
चुन्नी का गिर गुड्डा टूटा ॥
मुन्नी बोली—हाय ! हाय ! रे,
सिर धड़ सारा इसका फूटा ॥
ऊपर कौवे शोर मचाते ।
तिनके ला घोंसला बनाते ॥
नीचे कहतीं चुन्नी-मु ।
कौवे हमको धीर बँधाते ॥



परियाँ और बौना

गरमी का मौसम था। पानी नहीं बरसा था। कहीं कहीं एक आध बादल का टुकड़ा दिखाई पड़ जाता था। पर इससे चमेली को चैन न मिलता। वह दिन भर घर में बैठी रहती और जब दिन डूब जाता तो बाग़ में जाकर हरी घास पर खेलती।

एक दिन खेलते खेलते उसने मकड़ी का जाला देखा। जाला एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक तना हुआ था और मकड़ी उस पर ऐसे दौड़ रही थी जैसे पटरी पर रेल दौड़ती है। मकड़ी जाला किस तरह तनती है? यह बात चमेली की समझ में न आई। वह बैठकर सोचने लगी। शाम का समय था, ठंडी ठंडी हवा बह रही थी, उसे नींद आ गई।

अब उसे बड़े सुन्दर सुन्दर सपने दिखलाई पड़ने लगे। उसने देखा कि एक बूढ़ा बौना एक पत्ते पर बैठा है। उसके हाथ में महीन महीन तार हैं। उन तारों से वह मकड़ी के लिए जाला का घर बना रहा है। आसमान



में दो परियाँ उड़ रही हैं, उनके तितली के-से बहुत ही सुन्दर पंख लगे हैं। वे परियाँ अपने पतले हाथों से महीन तार बना रही हैं। उन्हीं तारों से बौना जाला बुन रहा है और उनमें आपस में ये बातें हो रही हैं—

बौना—"जल्दी करो, अभी बहुत-सी मकड़ियों के लिए जाला बुनना है, ऐसा न हो कि सवेरा हो जाय और लोग आकर हमको देख लें।"

परियाँ—"यहाँ से सूरज निकलने की जगह ठीक ठीक दिखलाई पड़ रही है। उसके लाल होते ही हम तुमको झट से खींच लेंगी और बात की बात में उड़कर बादल में छिप जायँगे, घबड़ाओ मत।"

चमेली यह सब देख और सुनकर बहुत ख़ुश हुई।



उसने मन ही मन कहा—"अब मुझे मालूम हो गया कि मकड़ी का जाला कैसे बनता है। घर में चलकर सारा हाल मैं माँ से कहूँगी और भाई को अपने साथ लाऊँगी, वह भी परियों की लीला देखेगा।"

इसी बीच में बौने ने चिल्ला कर कहा—"भागो भागो, एक लड़की हम लोगों को देख रही है।"

चमेली की आँख खुल गई। पर अब न बौना था, न परियाँ था, न कहीं जाला दिखलाई पड़ रहा था। उसने देखा कि चन्द्रमा बहुत ऊँचे चढ़ आया है, रात ज्यादा हो गई है और मालूम नहीं वह कब से सो रही है।

आँख मींजती हुई ,वह घर को चली। माँ खाना तैयार किये उसका रास्ता देख रही थी। चमेली ने सारा हाल कह सुनाया और पूछा—"माँ यह सपना था या सचमुच।"

मेरी गुड़िया।

मेरी गुड़िया बड़ी दुलारी।
है मुझको प्राणों से प्यारी॥
इसे नहीं मैं तज सकती हूँ।
तज सकती हूँ दुनिया सारी॥
मुझे बहुत ही भाती है यह।
मन मेरा बहलाती है यह॥
साथ हमारे चलती फिरती।
साथ हमारे खाती है यह॥
कपड़े नये सिलाऊँगी मैं।
गहने नये गढ़ाऊँगी मैं॥
दुनिया की सारी गुड़ियों से।
ज्यादा इसे सजाऊँगी मैं॥

शेर-बच्चा



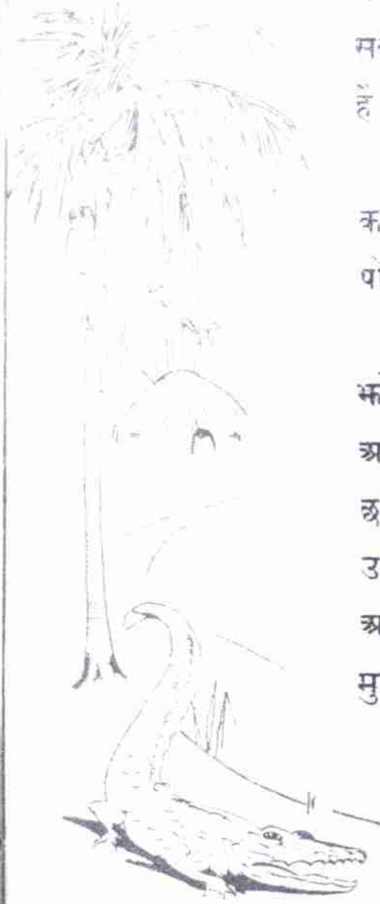
बिहारी एक गाँव में रहता था और पास के शहर में पढ़ने जाया करता था। एक रोज़ जब वह शहर को जा रहा था रास्ते में उसे एक बड़ा-सा मकान बना हुआ दिखलाई पड़ा। बिहारी अपने मन में सोचने लगा—"अभी कल तो यहाँ पर बिलकुल जङ्गल था, आज मकान कैसे बन गया ?"

वह यह सोच ही रहा था कि उसे मालूम पड़ा जैसे कोई लड़की कह रही हो—"भैया ज़रा इधर हो से आना।"

बिहारी ने देखा कि मकान के फाटक पर सचमुच एक लड़की खड़ी है। बिहारी उसके पास जाकर बोला—"कहो, क्या चाहती हो ?"

लड़की ने जवाब दिया—"एक जादूगर मुझे पकड़ लाया है। जादू के ज़ोर से इस

जङ्गल में इसने यह मकान खड़ा करके इसमें मुझे कैद कर दिया है। उसने न मालूम कैसा जादू कर दिया है कि मैं इस मकान के भीतर तो चल फिर सकती हूँ पर इसके बाहर नहीं निकल सकती। मेरा शरीर दरवाज़े में आकर चिपक जाता है। मुझे किसी तरह निकाल सको तो निकालो।

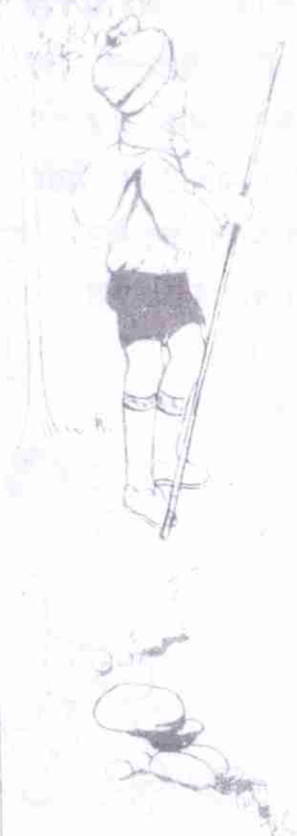


बिहारी ने कहा—"ज़रूर कोशिश करूँगा। ज़रा ठहरो मैं अपनी शेर-बच्चोंवाली पोशाक पहन लूँ तो कहो।"

लड़की चुप हो गई। बिहारी ने अपना झोला खोला। बूट, मोजा जाँघिया, कमीज़ साफ़ा आदि पहन कर वह छोटा-सा बालचर बन गया। छोटे बालचर को शेर-बच्चा कहते हैं। स्कूल में उसे शेर-बच्चों का काम सिखाया गया था। वह अकड़ कर खड़ा हो गया और बोला—"अब कहो, मुझे क्या करना चाहिए ?"

लड़की बोली—"जादूगर रोज़ छोटी-सी नाव पर बैठकर इस पार आता है। यदि





वह आज न आने पावे तो उसके जादू का अ...
जाता रहे और मैं छूट जाऊँ।"

"यह कोई मुश्किल काम नहीं है" कहता हुआ बिहारी नदी की तरफ़ चल पड़ा।

किनारे पहुँच कर उसने देखा कि एक घड़ियाल एक पेड़ के नीचे बैठा है। उससे डरकर एक बन्दर पेड़ पर चढ़ गया है और बेचारा उतर नहीं सकता। बिहारी ने घड़ियाल को भगा दिया। इस पर बन्दर ने खुश होकर कहा—"मैं हनुमान् जी के खानदान का हूँ, तुमसे बड़ा खुश हूँ। जो चाहो सो माँग लो।"

बिहारी ने कहा—जब तक मैं देखता रहूँ उस पार से जो नाव आ रहा है वह अचल हो जाय।

इस तरह उसके जादू का असर जाता रहा और लड़की छूट गई।

गुड़ियों की रानी



है यह लड़की भोली भाली।
पढ़ती है बुनती है जाली॥
सुनती है यह खूब कहानी।
कहलाती गुड़ियों की रानी॥
पहने एक निराली साड़ी।
फिरती है यह झाड़ी झाड़ी॥
ले किताब पढ़ने जाती है।
रस्ते में चलती गाती है॥
फूलों में फूली बैठी है।
दुनिया को भूली बैठी है॥
चिड़िया या तितली आ जाती।
तो जी का कुछ हाल बताती॥

नये खिलौने



भोला को खेल खिलौनों का बड़ा शौक था। दो चार पैसे भी वह पाता तो फ़ौरन बाज़ार को दौड़ जाता और कोई न कोई खिलौना ख़रीद लाता।

एक बार उसके मामा आये और उसको एक रुपया देकर कहने लगे—"अब तुम बड़े हो गये हो तुम्हें वे चीज़ें मोल लेनी चाहिए जो बड़े लड़कों के काम की हों।"

"इस बार ऐसी ही चीज़ें लाऊँगा" कहता हुआ भोला उसी समय बाज़ार की तरफ़ दौड़ा। जल्दी में वह जूता पहनना भी भूल गया।

खिलौनों की दूकान पर पहुँच कर उसने देखा कि एक से एक सुन्दर खिलौने रखे हैं। जिस चीज़ पर उसकी नज़र जाती उसी को ख़रीदने का उसका जी करता। कपड़े की बिल्ली समझ रही थी कि भोला मुझको ख़रीदेगा। लकड़ी का आदमी मन ही मन ख़ुश हो रहा था कि मुझको ख़रीदेगा पर भोला ने किसी को न ख़रीदा। तमाम बाज़ार में फिर कर उसने काठ की ढाल, तलवार और एक छोटा-सा ढोल ख़रीदा। इन चीज़ों को लेकर वह घर आया और ज़ोर ज़ोर से ढोल बजाने लगा। थोड़ी देर ढोल बजाने के बाद उसने धोती कसी और पैतरा बदलने लगा। घरवाले हँसते हँसते लोट पोट हो गये। जब कोई पूछता यह क्या लाये हो तो वह जवाब देता "मैं बड़ा हो गया हूँ, लड़ाई का सामान लाया हूँ।"





गुलाब और चमेली

गुलाब और चमेली दोनों भाई बहन थे। दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। जब बाग़ में घूमने जाते तो दोनों एक दूसरे के कंधे पर हाथ रख लेते और बड़े प्रेम से इधर-उधर टहलते।

गुलाब ने एक गमले में सूरजमुखी का एक पौधा लगाया था। ऐसा कोई दिन न जाता जब दोनों बच्चे उस पौधे को न देखते। धीरे धीरे वह पौधा बड़ा हुआ और उसमें दो सुन्दर फूल लगे। एक फूल बहुत बड़ा था और एक कुछ छोटा। दोनों फूलों को दोनों बच्चों ने बाँट लिया। बड़ा फूल गुलाब के हिस्से में पड़ा और छोटा चमेली के। दोनों एक दूसरे के फूलों की बड़ी तारीफ़ करते और खूब खुश होते।

एक रोज़ जब दोनों बच्चे बाग़ में गये तो देखा कि चमेली का फूल किसी ने कुतर डाला है। चमेली बहुत उदास हो गई और

कहने लगी—"हाय भगवान् मैंने किसी का क्या बिगाड़ा था जो मेरे फूल की यह हालत हो गई।"

बहन को उदास देखकर गुलाब भी उदास हो गया और कहने लगा—"बहन अफ़सोस मत करो, तुमको मैं अपना फूल दे दूँगा।"

पेड़ की डाल पर बैठी एक गिलहरी ये सब बातें सुन रही थी, उसी ने फूल कुतरा था। "हाय! मैंने भोले बालकों को तकलीफ़ क्यों पहुँचाई?" यह सोचकर गिलहरी दुखी होने लगी। जब उससे न रहा गया तो उसने हाथ जोड़ कर लड़कों से कहा— "मेरा क़सूर माफ़ करो, मुझसे बड़ी ग़लती हो गई।"

गुलाब, चमेली ने गिलहरी का क़सूर माफ़ कर दिया। उस दिन से तीनों में बड़ी दोस्ती हो गई और जब गुलाब चमेली बाग़ में घूमने जाते तो गिलहरी हाथ जोड़े उनकी अगवानी को तैयार रहती।

———

देखो भाई

देखो भाई देखो भाई ।
बनता है घर देखो भाई ॥
इसमें गुड़ियाँ बैठ पढ़ेंगी ।
लाओ कुर्सी मेज तिपाई ॥
देखो भाई देखो भाई ।
बिगड़ गया घर देखो भाई ॥
ओ हो कहाँ पढ़ेंगी गुड़ियाँ ।
रखकर कुर्सी मेज तिपाई ॥



बन्द करो

दिन बीता अब आई रात ।
कलम गई थक थकी दवात ॥
तुम भी पढ़ना बन्द करो अब ।
मानो प्यारे मेरी बात ॥
मुँह धो खा पी लो दो कौर ।
क्या सीखा बोलो कर ग़ौर ।
ठीक ठीक बतलाओगे तो ।
पढ़ने को पाओगे और ॥
पूरा हुआ आज का काम ।
आओ चलो करें आराम ॥
प्रभु से यही विनय है भाई ।
पढ़ते बीते उमर तमाम ॥

